॥ श्रीहरिः ॥

207

रामस्तवराज

(सटीक)

रामस्तवराज

श्रीगणेशाय नमः॥ अस्य श्रीरामचन्द्रस्तवराज-स्तोत्रमन्त्रस्य सनत्कुमार ऋषिः। श्रीरामो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सीता बीजम्। हनुमान् शक्तिः। श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इस श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्र-मन्त्रके सनत्कुमार ऋषि, श्रीराम देवता, अनुष्टुप् छन्द, सीता बीज तथा हनुमान् शक्ति हैं और श्रीरामकी प्रसन्नताके लिये जपमें इसका विनियोग है।

सूत उवाच

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं व्यासं सत्यवतीसुतम्।
धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम्॥ १॥

सूतजी कहते हैं—एक समयकी बात है, धर्मनन्दन राजा युधिष्ठिरने अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर सम्पूर्ण शास्त्रोंके अर्थका तत्त्वतः ज्ञान रखनेवाले सत्यवतीकुमार मुनीश्वर व्यासजीसे इस प्रकार प्रश्न किया॥ १॥

युधिष्ठिर उवाच

भगवन् योगिनां श्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद।
किं तत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्तिसाधनम्॥ २॥

श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तम।

युधिष्ठिर बोले—भगवन्! आप योगियोंमें श्रेष्ठ हैं, सम्पूर्ण शास्त्रोंके विशेष विद्वान् हैं; अतः मैं आपके मुखसे यह सुनना चाहता हूँ कि तत्त्व क्या है? सर्वोत्तम जपनीय मन्त्र कौन-सा है? तथा कौन-सा ध्यान मोक्षका साधक है? मुनिप्रवर! ये सब बातें आप मुझे बताइये॥ २½ ॥

वेदव्यास उवाच

धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः॥ ३॥
यत्परं यद्गुणातीतं यज्ज्योतिरमलं शिवम्।
तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपदकारणम्॥ ४॥

वेदव्यासजीने कहा—महाभाग धर्मराज! सुनो, मैं सब बातें ठीक-ठीक बताता हूँ। [तत्त्व क्या है! यह सुनो—] जो सर्वोत्कृष्ट, तीनों गुणोंसे अतीत, निर्मल एवं कल्याणमय है, वही कैवल्यपदका कारणभूत परम तत्त्व है॥ ३-४॥

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।
ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः॥ ५॥

[अब सर्वोत्तम जपनीय मन्त्र सुनो—] 'श्रीराम' यह परम उत्तम जपनीय मन्त्र है। इसीको 'तारक ब्रह्म' कहा गया है। यह ब्रह्महत्या आदि पापोंका नाश करनेवाला है—ऐसी वेदवेत्ताओंकी मान्यता है॥ ५॥

श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः॥ ६॥

जो लोग 'श्रीराम राम' इस मन्त्रका सदा जप करते हैं; उन्हें भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त होंगे—इसमें संशय नहीं है॥ ६॥

स्तवराजं पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता।
तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम्॥ ७॥

पूर्वकालमें बुद्धिमान् महात्मा नारदजीने जिस स्तवराजका पाठ किया था, वह सब मैं श्रीहरिके ध्यानपूर्वक बताऊँगा॥ ७॥

प्राप्तिके एकमात्र साधन हैं; उन सच्चिदानन्दघन कृष्णस्वरूप जगन्मय श्रीरामको नमस्कार करके मैं उनके स्तवराजका वर्णन करूँगा॥ ९॥

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे।
स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम्॥ १०॥

अयोध्यानगरीमें रम्य रत्नमण्डपके भीतर कल्पवृक्षके नीचे उसके मूलभागके समीप शुभ रत्नसिंहासनका ध्यान करे॥ १०॥

तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्च वेष्टितम्।
स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्त्रादित्यतेजसम्॥ ११॥

पितुरङ्कगतं रामिन्द्रनीलमणिप्रभम्।
कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम्॥ १२॥

उस सिंहासनके मध्यभागमें अष्टदल-कमल सुशोभित है, जो नाना प्रकारके रत्नोंसे परिवेष्टित है; उस कमलके ऊपर कर्णिकास्थानमें दशरथनन्दन श्रीरामका चिन्तन करे। उनका तेज सहस्रों सूर्योंके पुंजीभूत प्रभावको तिरस्कृत कर रहा है। वे श्रीराम अपने पिता चक्रवर्ती महाराज दशरथकी गोदमें बैठे हैं। उनकी अंगकान्ति इन्द्रनील मणिकी प्रभाको लज्जित कर रही है। उनके सम्पूर्ण अंग अत्यन्त कोमल हैं, नेत्र बड़े-बड़े हैं तथा वे रघुनन्दन विद्युत्के समान चमकीले पीताम्बरसे शुभोभित हैं॥ ११-१२॥

भानुकोटिप्रतीकाशकिरीटेन विराजितम्।
रत्नग्रैवेयकेयूररत्नकुण्डलमण्डितम् ॥ १३ ॥

करोड़ों सूर्योंके समान उद्भासित कमनीय किरीट उनके मस्तकको प्रकाशित कर रहा है। रत्नमय कण्ठहार, मणिमय केयूर तथा रत्न-निर्मित कुण्डलोंसे वे मण्डित हैं॥ १३ ॥

रत्नकङ्कणमञ्जीरकटिसूत्रैरलङ्कृतम् ।
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥ १४ ॥

रत्नोंके ही बने हुए कंकण, मंजीर तथा कटिसूत्र उनके हस्त-पाद एवं कटिभागको अलंकृत किये हुए हैं, उनका वक्ष:स्थल श्रीवत्स-

चिह्न (स्वर्णमयी रेखा) तथा कौस्तुभमणिसे देदीप्यमान है। मोतियोंके हार उनकी शोभा बढ़ाते हैं॥ १४॥

दिव्यरत्नसमायुक्तमुद्रिकाभिरलङ्कृतम्।
राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्स्मिताननम्॥ १५॥

उनकी करांगुलियाँ दिव्य रत्नजटित मुद्रिकाओंसे अलंकृत हैं। रघुकुलनन्दन श्रीरामका वह बालरूप दो भुजाओंसे सुशोभित है। उनके मुखपर मन्द-मन्द मुसकानकी छटा छिटकी हुई है॥ १५॥

तुलसीकुन्दमन्दारपुष्पमाल्यैरलङ्कृतम्।
कर्पूरागुरुकस्तूरीदिव्यगन्धानुलेपनम्॥ १६॥

तुलसी, कुन्द तथा मन्दारपुष्पोंसे रचित मनोहर माला उनके ग्रीवाभागको अलंकृत कर रही है। कर्पूर, अगुरु, कस्तूरी तथा दिव्य गन्ध पदार्थोंसे तैयार किया गया अनुलेप उनके श्रीअंगोंकी शोभा बढ़ा रहा है॥ १६ ॥

योगशास्त्रेष्वभिरतं योगेशं योगदायकम्।
सदा भरतसौमित्रशत्रुघ्नैरुपशोभितम्॥ १७॥

वे योगशास्त्रोंमें अभिरत हैं, योगेश्वर तथा योगदाता हैं; भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न—ये तीनों भाई सदा साथ रहकर उनकी श्रीवृद्धिमें सहायक हो रहे हैं॥ १७॥

विद्याधरसुराधीशसिद्धगन्धर्वकिन्नरैः ।
योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम् ॥ १८ ॥

विद्याधरगण, देवराज इन्द्र, सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर, योगीन्द्रवृन्द तथा नारद आदि देवर्षि दिन-रात उनकी स्तुति करते रहते हैं॥ १८॥

विश्वामित्रवसिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम् ।
सनकादिमुनिश्रेष्ठैर्योगिवृन्दैश्च सेवितम् ॥ १९ ॥

विश्वामित्र तथा वसिष्ठ आदि मुनि सदा उनकी सेवामें उपस्थित रहते हैं। सनक-सनन्दन आदि मुनिवर एवं योगियोंके समुदाय उनकी समाराधनामें संलग्न हैं॥ १९॥

रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम्।
मङ्गलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम्॥ २०॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम्।
कौसल्यानन्दनं रामं धनुर्बाणधरं हरिम्॥ २१॥

रघुवीर राम बड़े वीर हैं। धनुर्वेदके विशिष्ट ज्ञाता हैं। दिव्य-विग्रह, कमलनयन श्रीराम मंगलके आश्रय हैं। सम्पूर्ण शास्त्रोंके अर्थ एवं तत्त्वके ज्ञाता हैं। आनन्दकारक सौन्दर्यसे सुशोभित हैं। कौसल्या-नन्दन भगवान् श्रीराम अपने एक हाथमें धनुष और दूसरेमें बाण धारण करते हैं ॥ २०-२१ ॥

एवं संचिन्तयन् विष्णुं यज्ज्योतिरमलं विभुम्।
प्रहृष्टमानसो भूत्वा मुनिवर्यः स नारदः॥ २२॥

(भगवान्‌के इस स्वरूपका ध्यान करना चाहिये।) इस प्रकार निर्मल, व्यापक, ज्योतिर्मय विष्णुस्वरूप श्रीरामका बारम्बार चिन्तन करके मुनिवर्य श्रीनारदजीका हृदयपंकज आनन्दातिरेकसे खिल उठा॥ २२॥

सर्वलोकहितार्थाय तुष्टाव रघुनन्दनम्।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा चिन्तयन्नद्भुतं हरिम्॥ २३॥

वे दोनों हाथ जोड़ अद्भुत महिमावाले श्रीहरिका चिन्तन करते

हुए सम्पूर्ण लोकोंके हितके लिये रघुकुलनन्दन श्रीरामका स्तवन करने लगे॥ २३॥

यदेकं यत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम्।
यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिन्तयाम्यहम्॥ २४॥

जो एकमात्र—अद्वितीय, परम नित्य, अनन्त, चिन्मय, केवल तथा लोकमें सर्वत्र व्यापक हैं, श्रीरामके उस स्वरूपका मैं चिन्तन करता हूँ॥ २४॥

विज्ञानहेतुं विमलायताक्षं प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुम्।
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवं परात्परं राममहं भजामि॥ २५॥

जो विज्ञानके हेतु, विमल विशाल नयनोंसे सुशोभित, प्रज्ञान-

स्वरूप तथा आत्मानन्दकी उपलब्धिके अद्वितीय कारण हैं, उन आदिदेव, परात्पर हरि लोकरमण श्रीरामचन्द्रजीका मैं भजन करता हूँ॥ २५ ॥

कविं पुराणं पुरुषं पुरस्तात् सनातनं योगिनमीशितारम्।
अणोरणीयांसमनन्तवीर्यं प्राणेश्वरं राममसौ ददर्श॥ २६ ॥

इतना कहते-कहते नारदजीको प्राणवल्लभ श्रीरामके प्रत्यक्ष दर्शन हुए। वे श्रीराम कवि (त्रिकालदर्शी), पुराण-पुरुष, आदिपुरुष, सनातन, योगी, ईश्वर, अणुसे भी अणु तथा अनन्त बल-पराक्रमके सिन्धु हैं॥ २६ ॥

नारद उवाच

नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम्।
कविं पुराणं वागीशं रामं दशरथात्मजम्॥ २७॥

दर्शनके पश्चात् श्रीनारदजी बोले—जो नारायण (जीवमात्रके अधिष्ठान), जगन्नाथ, मनोहर, सम्पूर्ण जगत्के पालक, कवि, पुराणपुरुष तथा वाणीपति हैं; उन दशरथनन्दन श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ २७॥

राजराजं रघुवरं कौसल्यानन्दवर्धनम्।
भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम्॥ २८॥

जो राजाओंके भी राजा, रघुकुलके श्रेष्ठ पुरुष तथा कौसल्या

माताका आनन्द बढ़ानेवाले हैं, जो सर्वोत्कृष्ट तेज, समस्त विश्वके अधीश्वर, रघुकुलके नाथ तथा जगद्गुरु हैं; उन श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ २८ ॥

सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम्।
सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम्॥ २९ ॥

जो सत्यस्वरूप हैं, सत्य भाषण जिन्हें प्रिय है, जो श्रेष्ठ हैं, जनककिशोरीके प्राणवल्लभ हैं तथा सर्वत्र व्यापक हैं, उन शान्तस्वरूप एवं सर्वकामपूरक लक्ष्मणाग्रज कमलनयन श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ २९ ॥

आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम्।
आनन्दरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम्॥ ३०॥

जो अदितिनन्दन, ईश्वर, घृणि, सूर्यस्वरूप, रोगरहित, आनन्दमय, सौम्य तथा करुणामय हैं; उन राघवेन्द्र श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ३०॥

जामदग्निं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम्।
वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम्॥ ३१॥

जो तपोमूर्ति परशुधारी जमदग्निकुमार परशुरामस्वरूप हैं, वाणीके अधिपति, वरदायक, प्रत्येक शब्दके वाच्यार्थरूप तथा गरुडवाहन लक्ष्मीपति हैं, उन श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ३१॥

श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्दविग्रहम्।
हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम्॥ ३२॥

जो सच्चिदानन्दविग्रह, शार्ङ्गधनुष धारण करनेवाले, हलधररूप, विष्णुस्वरूप तथा ईशानस्वरूप हैं; उन करुणावरुणालय बलरामरूपधारी श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ३२॥

श्रीवल्लभं कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम्।
मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम्॥ ३३॥
वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम्।
गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम्॥ ३४॥

गोगोपालपरीवारं गोपकन्यासमावृतम्।
विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्॥ ३५॥

जो श्रीवल्लभ, कृपानाथ, जगन्मोहन, अच्युत, मत्स्य, कूर्म, वराह आदि रूपधारी, अविनाशी, वासुदेव, जगत्की उत्पत्तिके स्थान, आदि-अन्त-रहित, हरि (भयहारी), गोविन्द (गौओंके इन्द्र), गोपति, विष्णु, गोपीजनमनोहर, गौओं और गोपालोंसे आवृत, गोपकन्याओंसे घिरे हुए, विद्युत्पुंजके समान पीतवस्त्रधारी, श्यामविग्रह एवं जगन्मय हैं, उन श्रीकृष्णस्वरूप श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ३३—३५॥

गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम्।
कामरूपं कलावन्तं कामिनीकामदं विभुम्॥ ३६॥
मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम्।
श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम्॥ ३७॥

जो गौओं तथा गोपिकाओंसे आवृत, वेणुवादनमें तत्पर, इच्छानुसार रूपधारी, सम्पूर्ण कलाओंसे सम्पन्न, अपनी कामना करनेवाली प्रेयसियोंकी इच्छा पूर्ण करनेवाले, व्यापक, कामदेवस्वरूप, मथुरानाथ, माधव, मकरध्वज, श्रीधर, श्रीकी प्राप्ति करानेवाले, श्रीजीके स्वामी, लक्ष्मीनिवास तथा परात्पर पुरुषोत्तम हैं; उन श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ३६-३७॥

भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिं भूमिभूषणम्।
सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरिणम्॥ ३८ ॥
श्रीनृसिंहं महाबाहुं महान्तं दीप्ततेजसम्।
चिदानन्दमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम्॥ ३९ ॥
आदित्यमण्डलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम्।
भक्तिप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम्॥ ४० ॥
कौसल्येयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियम्।
सिंहासने समासीनं नित्यव्रतमकल्मषम्॥ ४१ ॥

जो भूतनाथ, भूपति, भद्रस्वरूप, विभूतिमय, भूमिके भूषण,

सर्वदुःखहारी, वीर, दुष्टों तथा दानवोंके वैरी, श्रीनृसिंहस्वरूप, विशालबाहु, महान् उद्दीप्त, तेजस्वी, चिदानन्दमय, नित्य, प्रणवरूप, ज्योतिर्मय, सूर्यमण्डलमें व्याप्त, निश्चित अर्थस्वरूप, भक्तिप्रिय, कमलनयन, भक्तोंके अभीष्टदाता, कौसल्याकुमार, कलामूर्ति, ककुत्स्थकुलभूषण, कमलावल्लभ, सिंहासनपर आसीन, नित्यव्रतधारी तथा अकल्मष (निष्कलंक) हैं; उन श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ३८—४१ ॥

विश्वामित्रप्रियं दान्तं स्वदारनियतव्रतम्।
यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम्॥ ४२ ॥

सत्यसन्धं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम्।
सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम्॥ ४३॥
दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम्।
वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम्॥ ४४॥
नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्प्रियम्।
शुद्धं सूक्ष्मं परं शान्तं तारकं ब्रह्मरूपिणम्॥ ४५॥

जो विश्वामित्रजीको परम प्रिय हैं, जिनके मन और इन्द्रियाँ सदा वशमें हैं, जो नियमपूर्वक अपनी ही पत्नीमें अनुराग रखनेवाले हैं; जो यज्ञके स्वामी, यज्ञपुरुष, यज्ञपालनपरायण, सत्यप्रतिज्ञ, क्रोधविजयी, शरणागतवत्सल,

सर्वक्लेशापहारी, विभीषणको वर देनेवाले, दशमुख रावणका संहार करनेवाले, रौद्ररूप, केशिमर्दन, केशव, वालीको मथ डालनेवाले, वीर, वानरराज सुग्रीवको अभीष्ट राज्य प्रदान करनेवाले, नर, वानर तथा देवताओंसे सेवित, हनुमान्‌जीके प्रियतम, शुद्ध एवं सूक्ष्मस्वरूप, परम शान्त तथा तारक ब्रह्मरूप हैं; उन भगवान् श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ४२—४५॥

सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम्।
सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम्॥ ४६॥
निरामयं निराभासं निरवद्यं निरञ्जनम्।
नित्यानन्दं निराकारमद्वैतं तमसः परम्॥ ४७॥

परात्परतरं तत्त्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम्।
मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम्॥ ४८॥

जो सम्पूर्ण भूतोंके आत्मारूपसे उनके भीतर स्थित हैं, सबके सनातन आधार, समस्त कारणोंके कर्ता, प्रकृतिके परम निदान (कारण), निरामय, आभासशून्य, निरवद्य, निरंजन, नित्यानन्द, निराकार, अद्वैत, अज्ञानान्धकारसे परे, परात्परतर, तत्त्वरूप तथा सत्यानन्दविज्ञानघनस्वरूप हैं; उन श्रीरघुश्रेष्ठ श्रीरामको सिर नवाकर मैं मनसे प्रणाम करता हूँ॥ ४६—४८॥

सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम्।
नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम्॥ ४९॥

जो सूर्यमण्डलके मध्यभागमें उसके आत्मारूपसे विराजमान हैं, अमेय हैं और श्रीगुरुचरणोंकी सेवामें तत्पर रहते हैं; उन सीतासहित कमलनयन श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ४९ ॥

नमोऽस्तु वासुदेवाय ज्योतिषां पतये नमः।
नमोऽस्तु रामदेवाय जगदानन्दरूपिणे॥ ५०॥

ग्रहों और नक्षत्रोंके अधिपति, वसुदेवनन्दन श्रीकृष्णचन्द्रको बारम्बार नमस्कार है। जगदानन्दस्वरूप श्रीरामदेवको प्रणाम है॥ ५० ॥

नमो वेदान्तनिष्ठाय योगिने ब्रह्मवादिने।
मायामयनिरासाय प्रपन्नजनसेविने॥ ५१॥

जो वेदान्तनिष्ठ (उपनिषदोंमें ब्रह्मरूपसे प्रतिपादित), योगी, ब्रह्मवादी, मायामय जगत्‌का बाध करनेवाले तथा शरणागत-जनोंका सेवन (उनपर अनुग्रह) करनेवाले हैं; उन श्रीरामको नमस्कार है॥ ५१ ॥

वन्दामहे महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम्।
जानकीहृदयानन्दवर्धनं रघुनन्दनम्॥ ५२ ॥

महेश्वरके प्रचण्ड कोदण्ड (धनुष)-का खण्डन तथा श्रीजनकनन्दिनीके हार्दिक आनन्दका संवर्धन करनेवाले श्रीरघुनन्दनजीकी मैं वन्दना करता हूँ॥ ५२ ॥

उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामाय ते
कामाय प्रमदामनोहरगुणग्रामाय रामात्मने।
योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारवि-
ध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः॥५३॥

जो प्रफुल्ल निर्मल एवं कोमल नीलोत्पलदलके समान श्याम हैं, कमनीय कामस्वरूप हैं, जिनका गुणसमुदाय प्रमदा-जनोंके मनको हर लेनेवाला है तथा जो योगारूढ़ मुनीश्वरोंके मानसरोवरमें विहार करनेवाले हंसरूप हैं; उन संसारबन्धनके नायक उद्दीप्त तेजस्वी रघुकुलभूषण एवं योगियोंके हृदयमें

रमण करनेवाले आप श्रीरामस्वरूप परम पुरुषको नमस्कार है॥ ५३ ॥

भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठ-
मादित्यचन्द्रानलसुप्रभावम् ।
सर्वात्मकं सर्वगतस्वरूपं
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ५४॥

जो संसारके स्रष्टा, वेदवेत्ताओंमें श्रेष्ठ, सूर्य, चन्द्रमा और अग्निके समान उत्तम प्रभावशाली, सर्वस्वरूप, सर्वत्र व्यापक और तमसे परे हैं; उन भगवान् श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ५४॥

निरञ्जनं निष्प्रतिमं निरीहं
निराश्रयं निष्कलमप्रपञ्चम्।
नित्यं ध्रुवं निर्विषयस्वरूपं
निरन्तरं राममहं भजामि॥ ५५॥

जो निरंजन, निरुपम, निरीह, अन्य आश्रयसे रहित, निष्कल (निरवयव अथवा अखण्ड), दृश्य-प्रपंचसे अतीत, नित्य, ध्रुव, निर्विषस्वरूप तथा निरन्तर (व्यवधानशून्य—व्यापक) हैं; उन श्रीरामचन्द्रजीका मैं भजन करता हूँ॥ ५५॥

भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तं
भक्तिप्रियं भानुकुलप्रदीपम्।

भूतत्रिनाथं भुवनाधिपं तं
भजामि रामं भवरोगवैद्यम्॥ ५६ ॥

जो भवसागरसे पार होनेके लिये जहाज हैं, जिन्हें भक्ति प्रिय है, जो पाँचों भूतों तथा तीनों लोकोंके नाथ हैं, संसाररूपी रोगका निवारण करनेके लिये एकमात्र वैद्य एवं चतुर्दश भुवनोंके अधिपति हैं, उन सूर्यवंशप्रदीप भरताग्रज श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ५६ ॥

सर्वाधिपत्यं समराङ्गधीरं
सत्यं चिदानन्दमयस्वरूपम्।

सत्यं शिवं शान्तिमयं शरण्यं
सनातनं राममहं भजामि ॥ ५७ ॥

जो सर्वेश्वर, समरांगणके धीर-वीर, सत्यात्मा, चिदानन्दस्वरूप, सत्य, शिव एवं शान्तिमय हैं, उन शरणागतवत्सल सनातन श्रीरामका मैं भजन करता हूँ ॥ ५७ ॥

कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं
कविं पुराणं कमलायताक्षम्।
कुमारवेद्यं करुणामयं तं
कल्पद्रुमं राममहं भजामि ॥ ५८ ॥

जो कार्य-जगत् तथा क्रिया (प्रवृत्ति)-के कारण प्रमाणोंकी पहुँचसे परे, कवि (सर्वज्ञ), पुराणपुरुष, कमलनयन, सनकादि कुमारोंके वेद्य तथा कल्पवृक्षरूप हैं; उन करुणामय श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ५८॥

त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षं
दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम्।
महाबलं वेदनिधिं सुरेशं
सनातनं राममहं भजामि॥ ५९॥

त्रिभुवनपति, सरसीरुहलोचन, दयानिधान, द्वन्द्वोंके विनाशके हेतु,

महाबलशाली, वेदनिधि तथा सनातन देवेश्वर श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ५९॥

वेदान्तवेद्यं कविमीशितार-
मनादिमध्यान्तमचिन्त्यमाद्यम्।
अगोचरं निर्मलमेकरूपं
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ६०॥

जो वेदान्तवेद्य, कवि (क्रान्तदर्शी), ईशिता (ऐश्वर्यसम्पन्न) तथा आदि, मध्य और अन्तसे रहित हैं; उन अचिन्त्य, अगोचर, निर्मल, एकरूप एवं अज्ञानान्धकारसे अतीत आदिपुरुष श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ६०॥

अशेषवेदात्मकमादिसंज्ञ-
मजं हरिं विष्णुमनन्तमाद्यम्।
अपारसंवित्सुखमेकरूपं
परात्परं राममहं भजामि ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण वेद जिनके स्वरूप हैं, जो सबके आदि कहे जाते हैं, जो अजन्मा, हरि (भवतापका हरण करनेवाले), विष्णु (व्यापक), अनन्त, आदिपुरुष, अपार विज्ञानानन्दसिन्धु तथा एकरूप हैं; उन परात्पर श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ६१ ॥

तत्त्वस्वरूपं पुरुषं पुराणं
स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम्।

राजाधिराजं रविमण्डलस्थं
विश्वेश्वरं राममहं भजामि ॥ ६२ ॥

तत्त्वस्वरूप, पुराणपुरुष, अपने तेजसे सम्पूर्ण विश्वको परिपूर्ण करनेवाले, एक (अद्वितीय) तथा सूर्यमण्डलमें नारायणरूपसे विराजमान हैं; उन राजाधिराज विश्वनाथ श्रीरामका मैं भजन करता हूँ ॥ ६२ ॥

लोकाभिरामं रघुवंशनाथं
हरिं चिदानन्दमयं मुकुन्दम्।
अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रं
नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ६३ ॥

जो तमसे परे, सच्चिदानन्दस्वरूप, सम्पूर्ण विद्याओंके अधिपति, कवीन्द्र तथा मुकुन्द हरिरूप हैं; उन लोकाभिराम रघुवंशनाथ श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ६३ ॥

योगीन्द्रसङ्घैश्च सुसेव्यमानं
नारायणं निर्मलमादिदेवम्।
नतोऽस्मि नित्यं जगदेकनाथ-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥ ६४॥

योगीन्द्रोंका समुदाय जिनका सदा भलीभाँति सेवन करता है तथा जो मल-विक्षेपादि दोषोंसे रहित आदिदेव नारायणस्वरूप हैं; उन तमोगुणसे

अतीत, अपनी कान्तिसे सूर्यके समान प्रकाशमान तथा जगत्के एकमात्र स्वामी श्रीरामको मैं नित्यप्रति नमस्कार करता हूँ॥ ६४॥

विभूतिदं विश्वसृजं विरामं
राजेन्द्रमीशं रघुवंशनाथम्।
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमूर्तिं
ज्योतिर्मयं राममहं भजामि॥ ६५॥

जो ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले, विश्वस्रष्टा, सबके विराम (विश्राम) स्थान, अचिन्त्य, अव्यक्त, अनन्तमूर्ति तथा ज्योतिर्मय हैं; उन सर्वेश्वर रघुवंशनाथ राजाधिराज श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ६५ ॥

अशेषसंसारविहारहीन-

मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।

समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-

न्नारायणं विष्णुमहं भजामि॥ ६६॥

जो समस्त संसार-विहारसे रहित, सूर्यमण्डलमध्यवर्ती, परिपूर्ण आनन्दसे अभिराम, सबके साक्षी तथा तमसे परे हैं; उन सर्वव्यापी नारायणस्वरूप श्रीरामका मैं भजन करता हूँ॥ ६६॥

मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णकामं

कलानिधिं कल्मषनाशहेतुम्।

परात्परं यत्परमं पवित्रं
नमामि रामं महतो महान्तम्॥ ६७॥

जो मुनीन्द्रोंके लिये अत्यन्त गोपनीय तत्त्व, परिपूर्णकाम, कलाओंके निधान, पापनाशके हेतुभूत, परात्पर, परम पवित्र एवं महान्से भी महान् हैं; उन श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ॥ ६७॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो देवतास्तथा।
आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन॥ ६८॥

रघुनन्दन! आप ही ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, देवेन्द्र, देवता तथा सूर्य आदि समस्त ग्रहरूप हैं॥ ६८॥

तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा।
विप्रा वेदास्तथा यज्ञाः पुराणं धर्मसंहिताः॥ ६९॥
वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च।
यक्षराक्षसगन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजादयः॥ ७०॥
सनकादिमुनिश्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुङ्गव।

रघुकुलनायक! आप ही तपस्वी, ऋषि, सिद्ध, साध्य, मरुद्गण, ब्राह्मण, वेद, यज्ञ, पुराण, धर्मसंहिता, वर्ण, आश्रम, धर्म, वर्णधर्म, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, दिक्पाल, दिग्गज आदि तथा मुनिश्रेष्ठ सनक, सनन्दन आदि भी हैं॥ ६९-७०$\frac{१}{२}$॥

वसवोऽष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादश स्मृताः॥ ७१॥
तारका दश दिक् चैव त्वमेव रघुनन्दन।

रघुनन्दन! आप ही आठ वसु, तीनों काल, ग्यारह रुद्र, तारामण्डल तथा दसों दिशाएँ हैं॥ ७१ $\frac{१}{२}$ ॥

सप्तद्वीपाः समुद्राश्च नगा नद्यस्तथा द्रुमाः॥ ७२॥
स्थावरा जङ्गमाश्चैव त्वमेव रघुनायक।

रघुकुलनायक! आप ही सात द्वीप, सात समुद्र, पर्वत, नदियाँ, वृक्ष तथा स्थावर एवं जंगम भूत हैं॥ ७२ $\frac{१}{२}$ ॥

देवतिर्यङ्मनुष्याणां दानवानां तथैव च॥ ७३॥
माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुवल्लभ।

रघुकुलवल्लभ! आप ही देवताओं, तिर्यग्योनिके जीवों, मनुष्यों तथा दानवोंके भी माता-पिता और भ्राता हैं॥ ७३ १/२ ॥

सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेव हि॥ ७४॥
त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम।
त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोऽन्यन्नैव किञ्चन॥ ७५॥

पुरुषोत्तम! आप ही सबके परब्रह्म परमात्मा हैं। सम्पूर्ण जगत् आपका ही स्वरूप है (आप ही इसके अभिन्ननिमित्तोपादान कारण

हैं)। आप ही अविनाशी परम ज्योति हैं। आप ही तारक ब्रह्म (राम) हैं। आपसे भिन्न किसी भी वस्तुकी सत्ता ही नहीं है॥ ७४-७५ ॥

शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परं ब्रह्म सनातनम्।
राजीवलोचनं रामं प्रणमामि जगत्पतिम्॥ ७६ ॥

शान्त, सर्वगत, सूक्ष्म, सनातन, परब्रह्मरूप कमलनयन जगदीश्वर श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ॥ ७६ ॥

व्यास उवाच

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुङ्गवम्।
तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम्॥ ७७ ॥

व्यासजी कहते हैं—तदनन्तर अत्यन्त प्रसन्न हुए भगवान् श्रीराम मुनिवर नारदजीसे बोले—'मुनिश्रेष्ठ! मैं तुम्हारे द्वारा किये गये इस स्तवनसे संतुष्ट हूँ, तुम मुझसे उत्तम वर माँगो॥ ७७॥

नारद उवाच

यदि तुष्टोऽसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे।
त्वन्मूर्तिदर्शनेनैव कृतार्थोऽहं च सर्वदा॥ ७८॥

नारदजीने कहा—करुणानिधान सर्वज्ञ श्रीराम! यदि आप संतुष्ट हैं तो मैं आपके इस कमनीय अभिरामस्वरूपका दर्शन पाकर ही सदाके लिये कृतार्थ हो गया॥ ७८॥

धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम।
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे॥ ७९ ॥

पुरुषोत्तम! मैं धन्य हूँ, कृतकृत्य हूँ, पुण्यात्मा हूँ। आज मेरा जन्म सफल हो गया। आज मेरा जीवन भी सफल हो गया॥ ७९ ॥

अद्य मे सफलं ज्ञानमद्य मे सफलं तपः।
अद्य मे सफलं कर्म त्वत्पादाम्भोजदर्शनात्।
अद्य मे सफलं सर्वं त्वन्नामस्मरणं तथा॥ ८० ॥
त्वत्पादाम्भोरुहद्वन्द्वसद्भक्तिं देहि राघव।

आपके चरणारविन्दोंके दर्शनसे आज मेरा ज्ञान सफल हो गया, आज मेरी तपस्या भी सफल हो गयी। आज मेरा कर्म सफल हुआ; आज मेरा सब कुछ सफल हो गया। मैंने सदा जो आपके नामोंका स्मरण किया था, उसका फल भी मुझे प्राप्त हो गया। अब तो मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हे राघव! आप मुझे अपने युगल चरणारविन्दोंकी भक्ति प्रदान करें॥ ८० $\frac{१}{२}$ ॥

ततः परमसम्प्रीतः स रामः प्राह नारदम्॥ ८१॥

नारदजीकी इस बातसे भगवान् श्रीराम बड़े प्रसन्न हुए और उनसे बोले— ॥ ८१ ॥

श्रीराम उवाच

मुनिवर्य महाभाग मुने त्विष्टं ददामि ते।
यत्त्वया चेप्सितं सर्वं मनसा तद् भविष्यति॥ ८२॥

श्रीरामने कहा—मुनिवर्य! महाभाग मुने! मैं तुम्हें अभीष्ट वर देता हूँ। तुमने अपने मनमें जिस-जिस वस्तुकी इच्छा की है, वह सब तुम्हें प्राप्त होगी॥ ८२॥

नारद उवाच

परं न याचे रघुनाथ युष्म-
त्पादाब्जभक्तिः सततं ममास्तु।

इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे
पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे ॥ ८३ ॥

नारदजी बोले—रघुनाथ! मैं दूसरी कोई वस्तु नहीं माँगता, आपके चरणारविन्दोंकी भक्ति ही मुझे सदा प्राप्त हो। नाथ! यही मेरा प्रिय वर है, जिसके लिये मैं याचना करता हूँ और बारम्बार आपसे इसीको माँगता हूँ॥ ८३ ॥

व्यास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात् तस्मै वरान्तरम्।
वीरो रामो महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ ८४ ॥

अद्वैतममलं ज्ञानं स्वनामस्मरणं तथा।
अन्तर्दधौ जगन्नाथः पुरतस्तस्य राघवः॥ ८५॥

व्यासजी कहते हैं—युधिष्ठिर! नारदजीके इस प्रकार स्तुति करनेपर भगवान् श्रीरामने उन्हें उनका अभीष्ट वर तो दिया ही; यह दूसरा वर और भी दिया। सच्चिदानन्दविग्रह वीराग्रगण्य महातेजस्वी श्रीरामने नारदजीको निर्मल अद्वैत ज्ञान तथा निरन्तर स्वनामस्मरणका वर दिया। इसके बाद जगदीश्वर श्रीरघुनाथजी उनके सामनेसे अन्तर्हित हो गये॥ ८४-८५॥

इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम्।
सर्वसौभाग्यसम्पत्तिदायकं मुक्तिदं शुभम्॥ ८६॥

यह श्रीरघुनाथजीका परम उत्तम स्तवराज सब प्रकारके सौभाग्य तथा सम्पत्तिका दाता है। मोक्ष देनेवाला तथा मंगलमय है॥ ८६॥

कथितं ब्रह्मपुत्रेण वेदानां सारमुत्तमम्।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं तव स्नेहात्प्रकीर्तितम्॥ ८७॥

ब्रह्मापुत्र नारदजीके द्वारा कथित यह उत्तम स्तवराज सम्पूर्ण वेदोंका सार-तत्त्व है। गुह्यसे भी गुह्यतम तथा दिव्य है। युधिष्ठिर! इसे मैंने तुम्हारे स्नेहवश प्रकट किया है॥ ८७॥

यः पठेच्छृणुयाद्वापि त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः।
ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च॥ ८८॥

जो श्रद्धापूर्वक तीनों संध्याओंके समय इसका पाठ अथवा श्रवण करेगा, उसके ब्रह्महत्या आदि पातक तथा उसके समान अन्य बहुत-से उपपातक नष्ट हो जायँगे॥ ८८॥

स्वर्णस्तेयं सुरापानं गुरुतल्पगतिस्तथा।
गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि च॥ ८९॥
सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः।

सुवर्णकी चोरी, मदिरापान, गुरुपत्नीगमन, ब्रह्महत्या तथा इनके संसर्गसे होनेवाले जो महापातक हैं और गोवध आदि जो उपपातक तथा असत्यभाषणसे होनेवाले जो पाप हैं, वे सब पहलेके लाखों

कल्पोंमें क्यों न उपार्जित किये गये हों, उन सब पापोंसे इस स्तोत्रका पाठक अथवा श्रोता मुक्त हो जाता है॥ ८९ $\frac{१}{२}$ ॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्॥ ९०॥
श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते॥ ९१॥

मन, वाणी तथा क्रियाद्वारा उपार्जित समस्त पाप श्रीरामके स्मरणमात्रसे ही तत्काल नष्ट हो जाते हैं—यह ध्रुव सत्य है। यह सत्य है, यह सत्य है; इस विषयमें यह सत्य ही कहा जाता है॥ ९०-९१॥

रामः सत्यं परं ब्रह्म रामात् किञ्चिन्न विद्यते।
तस्माद्रामस्वरूपं हि सत्यं सत्यमिदं जगत्॥ ९२ ॥

श्रीराम सत्य परब्रह्मस्वरूप हैं। श्रीरामसे भिन्न कुछ नहीं है; अतएव श्रीरामस्वरूप यह जगत् सत्य है, सत्य है॥ ९२ ॥

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि॥ ९३ ॥

रघुकुलपुंगव! राजवर्य! राजेन्द्र श्रीरामचन्द्र! रघुनायक राघवेन्द्र

श्रीराम! राजाधिराज! रघुनन्दन रामचन्द्र! मैं आपका दास आज आपकी शरणमें आया हूँ॥ १३॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥ १४॥

कल्पवृक्षके नीचे सुवर्णमय महामण्डपमें पुष्पकविमानके मध्य-भागमें मणिमय सिंहासनपर भगवान् श्रीराम वीरासनसे सुखपूर्वक विराजमान हैं; उनके वामपार्श्वमें विदेहनन्दिनी सीताजी भी बैठी

हैं। वायुपुत्र हनुमान्‌जी सामने खड़े हो भगवान्‌से कुछ उपदेशके लिये प्रार्थना करते हैं और भरतादि बन्धुओंसे घिरे हुए श्याम-विग्रह श्रीराम मुनियोंको परम तत्त्वका उपदेश देते हैं—उसकी व्याख्या करते हैं। इस झाँकीमें श्रीरामका मैं भजन (ध्यान) करता हूँ॥ ९४॥

रामं रत्नकिरीटकुण्डलयुतं केयूरहारान्वितं
सीतालङ्कृतवामभागममलं सिंहासनस्थं विभुम्।
सुग्रीवादिहरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा
विश्वामित्रपराशरादिमुनिभिः संस्तूयमानं प्रभुम्॥ ९५॥

भगवती सीता श्रीरामचन्द्रजीके वामभागको सुशोभित कर रही हैं। श्रीराम रत्नमय किरीट और कुण्डलोंसे अलंकृत हैं, केयूर और हारसे विभूषित हैं, उनका स्वरूप अत्यन्त निर्मल है, वे सर्वव्यापी भगवान् दिव्य सिंहासनपर विराज रहे हैं, सुग्रीव आदि कपीश्वर तथा देवगण उनकी सेवामें संलग्न हैं तथा विश्वामित्र एवं पराशर आदि मुनि नित्य-निरन्तर उन प्रभुकी स्तुति करते रहते हैं। ऐसे भगवान् सीतापतिका मैं चिन्तन करता हूँ॥ ९५ ॥

सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानं
भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम्।

महितनृपभयानं सीतया शोभमानं
स्मर हृदयविमानं ब्रह्म रामाभिधानम्॥ ९६ ॥

जो सम्पूर्ण गुणोंके निधान हैं, योगीजन जिनकी स्तुति करते हैं, जिन्होंने अपनी भुजाओंद्वारा बड़े-बड़े अभिमानियोंको भी जीत लिया है, जो राक्षसराज विभीषण आदिके द्वारा सम्मानित हैं, जिन्होंने कुबेरके वाहन पुष्पकविमानका समादर किया है, जो सीताजीके द्वारा सुशोभित हैं तथा भक्तोंका हृदय जिनके लिये विमानरूप है, उन श्रीराम नामक परब्रह्मका स्मरण करो॥ ९६ ॥

रघुवर तव मूर्तिर्मामके मानसाब्जे
नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे।
अनिशमतुलभक्त्या मस्तकं त्वत्पदाब्जे
भवजलनिधिमग्नं रक्ष मामार्तबन्धो॥ १७॥

आर्तबन्धु रघुश्रेष्ठ! आपकी मनोहर मूर्ति मेरे मानसकमलमें विराजमान हो, नरकगतिका निवारण करनेवाला आपका मधुर नाम मेरे मुखमें सुशोभित हो, मेरा मस्तक निरन्तर अनुपम भक्तिभावसे आपके चरणकमलोंमें प्रणत हो। प्रभो! मैं भवसागरमें डूबा हुआ हूँ, आप मेरी रक्षा कीजिये॥ १७॥

रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम्।
कौसल्याभक्तिसम्भूतं जानकीकण्ठभूषणम्॥ ९८॥

चित्रकूटपति विष्णुस्वरूप श्रीराम एक दिव्य रत्न हैं, जो कौसल्याकी भक्तिसे प्रकट हो श्रीजनकनन्दिनी सीताके कण्ठहार बने हुए हैं। मैं उनकी वन्दना करता हूँ॥ ९८॥

इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इस प्रकार श्रीसनत्कुमारसंहितामें नारदजीद्वारा कथित 'श्रीरामचन्द्रस्तवराज' नामक स्तोत्र पूरा हुआ।

❑ ❑